साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 8, अंक : 44 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 21 जून 2023 से 27 जून 2023 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

200 से ज्यादा देशों में योगा का परचम लहराया

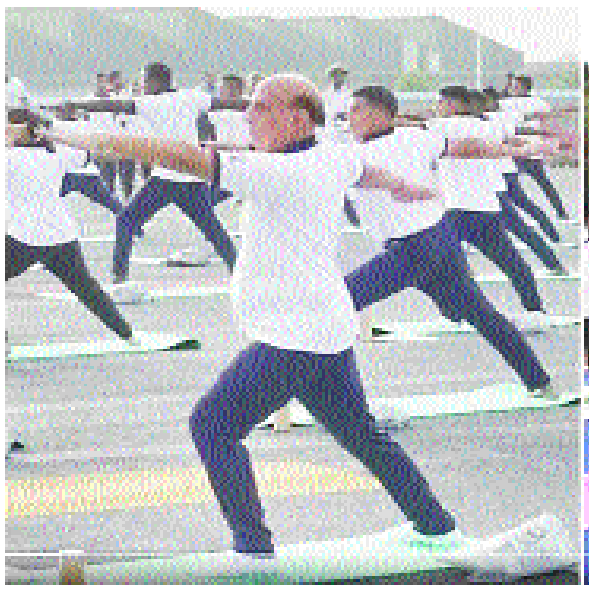

नई दिल्ली/भोपाल । अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आज दुनिया के 200 से ज्यादा देशों में योगा का परचम लहराया। यूरोप से लेकर चीन तक करोड़ों लोगों ने योग कार्यक्रम में भाग लिया वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी न्यूयार्क में योग कार्यक्रम में भाग लेंगे। दिल्ली और भोपाल में बड़े आयोजन किए गए। वहीं मध्यप्रदेश में योग की शिक्षा को अनिवार्य किए जाने का मुख्यमंत्री ने ऐलान किया। योग दिवस को 9 वर्ष पूर्व अंतरराष्ट्रीय दिवस घोषित किया गया था।

इधर मध्यप्रदेश के जबलपुर में योग प्रमियों से खचाखच भरे गैरिसन मैदान पर 15,000 से अधिक योगाभ्यासियों ने उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़, राज्यपाल मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ योग किया। सर्वप्रथम शंखनाद से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान बोले- मध्य प्रदेश में योग की शिक्षा अनिवार्य की जाएगी। राष्ट्रगान के दौरान पद्मभूषण कमलेश पटेल दाजी, सर्बानंद सोनोवाल, रामकिशोर नानू कांवरे, प्रहलाद पटेल, फग्गन सिंह कुलस्ते, राकेश सिंह, सुमित्रा वाल्मीकि सहित तमाम गणमान्य जन मौजूद रहे। वहीं रानीताल स्टेडियम में पीएम का संबोधन सुनाया गया। 21 जून को भारत सहित पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितंबर 2014 को संयुक्तराष्ट्र महासभा में प्रस्ताव रखा था। इसके बाद 2015 से योग दिवस मनाया जा रहा है। इस तिथि को इस लिए चुना गया क्योंकि 21 जून उत्तरी गोलार्ध में साल का सबसे लंबा दिन है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में योग सत्र का नेतृत्व करेंगे। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह नई दिल्ली में योग दिवस समारोह में शामिल होंगे। वहीं, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह कोच्चि में भारतीय नौसेना के विमान वाहक पोत आईएनएस विक्रांत पर योग कार्यक्रम में शिरकर करेंगे।

साईन्स ग्रुप के प्रतिनिधियों ने वन विहार में किया भ्रमण

भोपाल जी-20 समिट के साईन्स ग्रुप के लगभग 48 सदस्यों ने शनिवार को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में सुबह 6 से 8 बजे तक भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों ने स्वतंत्र विचरण करने वाले तृणभक्षी वन्य-प्राणी चीतल, सांभर, काला हिरण, नील गाय, जैकाल देखे।

प्रतिभागी सदस्य बड़े एनक्लोजर में रखे बाघ को देख कर रोमांचित हो उठे। उन्होंने एनक्लोजर में रखे शेर (लॉयन), हायना, पेन्थर एवं स्लॉथ बियर (भालू) भी बड़े रूचि के साथ देखा। प्रतिभागियों ने भ्रमण के दौरान संचालक, वन विहार श्रीमती पद्माप्रिय बालाकृष्णन से वन्य-प्राणियों से सम्बन्धित प्रश्न पूछे एवं जवाब पाकर संतुष्ट हुए। भ्रमण के दौरान उन्होंने कई प्रजाति के पक्षी जैसे-मोर, कार्मोरेंट, पोंड, हेरान, इग्रेट, पेन्टेडे स्टार्क आदि भी देखे एवं उनकी आवाजें सुन कर रोमांचित हुए। प्रतिभागियों ने पहाड़ी बाबा के व्यू पाईन्ट का भी लुप्त उठाया और इसे संरक्षित करने के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने शहर के मध्य स्थित छोटे से क्षेत्र में किए जा रहे संरक्षण के उत्तम प्रयास को सराहा। भ्रमण के दौरान संचालक, सहायक संचालक, बायोलॉजिस्ट एवं परिक्षेत्र अधिकारीगण ने प्रतिभागियों को वन विहार एवं वन्यप्राणियों के बारे में रोचक जानकारियाँ दी।

हिंदू कुश हिमालय की जैव विविधता को बड़ी तेजी से बदल रहा है जलवायु परिवर्तन

न्यूयार्क। वैश्विक तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस वृद्धि को यदि आगे नहीं भी बढ़ाने दिया जाता है, तब भी हिंदू कुश हिमालय (एचकेएच) क्षेत्र में जैव विविधता और पारिस्थितिकी के खतरे को रोका नहीं जा सकेगा। इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट (आईसीआईएमओडी) की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन और इंसानी हस्तक्षेप बढ़ने के कारण अच्छा खासा असर पड़ा है। हालांकि तापमान में वृद्धि की वजह से कुछ प्रजातियों को फायदा हो रहा है, लेकिन अधिकांश प्रजातियां पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। रिपोर्ट बताती है कि हिमालयी क्षेत्र में पत्तियों के गिरने और खिलने का समय बदल गया है। इससे पौधों के अस्तित्व में कमी आई है और प्रजातियों की भेद्यता को खतरा पैदा हो गया है। उदाहरण के लिए, पश्चिमी हिमालय में अल्पाइन अदरक रोसकोइया प्रजातियों में फेनोलॉजी परिवर्तन हो रहा है, जिससे पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में गिजर घाटी में पीले एमरेलिस फूल जल्दी खिल रहे हैं।

हिमालयी रोडोडेंड्रोन जिसे बुरांश भी कहा जाता है, नेपाल और उसके आसपास के इलाकों में कभी पहले खिलने लगे हैं तो कभी देर से खिलते हैं। पूर्वोत्तर चीन में तो इन फूलों के खिलने का समय प्रति वर्ष एक दिन आगे बढ़ा है। तापमान में वृद्धि के कारण बर्फबारी के पैटर्न में बदलाव के कारण वृक्ष रेखा में भी बदलाव आया है। कई पौधों की प्रजातियां जैसे कि हिमालयन पाइन भारत के पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में 11 से 54 मीटर प्रति दशक की दर से ऊपर की ओर खिसक रहे हैं। एक झाड़ीदार प्रजाति जुनिपरस पॉलीकार्पस की ट्रीलाइन 4,000 मीटर से ऊपर पाई गई है। सिक्किम हिमालय में लगभग 90 प्रतिशत स्थानिक प्रजातियां 27.53 से 22.04 मीटर प्रति दशक की दर से विस्थापित हुई हैं। पूर्वी लद्दाख के उत्तर-पश्चिम हिमालय में पाई जाने वाली पोटेंटिला पामीरिका सहित कई प्रजातियां लगभग 150 मीटर ऊपर की ओर बढ़ गई हैं। इस तरह के परिवर्तन भारत के बाहर, नेपाल में और चीन में तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में भी देखे गए हैं। जबकि इन विविधताओं के परिणामस्वरूप अधिकांश अल्पाइन क्षेत्र हरे हो गए हैं। बढ़ते शहरीकरण, ऊंचाई पर खेती, सूखे और मानवजनित दबाव के संपर्क में आने वाले कुछ क्षेत्रों में हरापन कम हो गया है। रपोर्ट में आगे कहा गया है कि आक्रामक प्रजातियों के प्रसार की वजह से देशी पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य, स्थिरता और उत्पादकता को भी खतरा बढ़ा है। भारत के कैलाश पवित्र में 5,000 मीटर से ऊपर की ऊंचाई क्षेत्र में लैंटाना कैमारा के प्रसार में 29.8 प्रतिशत और एग्रेटिना एडेनोफोरा के प्रसार में 45.3 प्रतिशत वृद्धि होने का अनुमान लगाया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि हिंदू कुश हिमालय में 26 आक्रामक पौधों की प्रजातियों में से 75 प्रतिशत का विस्तार हो चुका है, जबकि 25 प्रतिशत आक्रामक प्रजातियां सिकुड़ गई हैं। जिससे भारी आर्थिक नुकसान के साथ-साथ जैव विविधता और खाद्य सुरक्षा को खतरा बढ़ेगा। रिपोर्ट में हिंदू कुश क्षेत्र में घटते जीवों का भी उल्लेख किया गया है। स्तनधारी, कीड़े, सूक्ष्म जीव, पक्षी, उभयचर और मछलियां विलुप्त हो रहे हैं या आनुवंशिक और व्यवहारिक परिवर्तनों का सामना कर रहे हैं। 2080 तक भूटान, नेपाल, भारत और म्यांमार में स्नोलाइन (बर्फीला क्षेत्र) के ऊपर की ओर खिसकने से हिम तेंदुए के आवास प्रभावित होने की आशंका है। हिम तेंदुओं के अलावा, हिमालयी कस्तूरी मृग, गोल्डन स्नब-नोज्ड बंदर और हिमालयी ग्रे लंगूरों की आबादी घटने की आशंका भी जताई गई है। रिपोर्ट के मुताबिक भोजन की उपलब्धता में कमी की वजह से आवास में ऐसे परिवर्तन सामने आ रहे हैं। विशाल पांडा, एशियाई भूरा भालू, नीली भेड़, तिब्बती मृग, तिब्बती जंगली गधे और जंगली याक जैसी अन्य प्रजातियां, जो हिंदू कुश हिमालय की स्थानिक हैं में क्रमशः 44 प्रतिशत, सात प्रतिशत और 20 प्रतिशत कमी आई है। सैटर ट्रैगोपैन जैसे पक्षियों अब अधिक ऊंचाई वाले इलाकों में चले गए हैं। काली गर्दन वाले सारस के व्यवहार व आवास में परिवर्तन हो रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण उभयचरों में सबसे अधिक प्रभाव देखा गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि कश्मीर और हिमालय में पाए जाने वाले मेंढकों की प्रजातियां भी विलुप्ति का खतरा झेल रही हैं। सिक्किम हिमालय में मोनोक्लेड और किंग कोबरा 1,000 मीटर से 1,700 मीटर ऊपर चले गए हैं। सिक्किम में पाए जाने वाले मेंढक के प्रजनन काल में भी बदलाव देखा जा रहा है। चीन में स्थानिक अपोलो तितलियों की आबादी में गिरावट आ रही है। पूर्वी हिमालय में पूरे क्षेत्र में मोनोटोनिक चींटियों और कैटरपिलर फंगस में गिरावट आई है। पाकिस्तान में, मुरी पहाड़ियों और पड़ोसी क्षेत्रों में रहने वाली तितलियों की 14 प्रजातियों के गायब होने की सूचना है। चीन में तीन-पूंछ वाली स्वैलटेल, हिमालयी राहत ड्रैगनफ्लाई और टी शॉट-होल बोरर जैसे कीटों में भी बदलाव की खबर है। एवरेस्ट क्षेत्र में मच्छर आ गए हैं।

विशेषज्ञों का अनुमान है कि क्रायोस्फीयर में परिवर्तन जो पहले से ही पारिस्थितिक तंत्र और जैव विविधता को प्रभावित कर चुके हैं, हिंदू कुश हिमालय में प्रजातियों की गिरावट का कारण बने रहेंगे। 2050 में हिमालयी ग्रे लंगूर का आवास 60 प्रतिशत तक बढ़ जाएगा। तिब्बती भूरे भालू के आवास स्थल में 34 प्रतिशत तक कमी होने की आशंका है, जबकि नीली भेड़ के आवास क्षेत्र में 56 से 58 प्रतिशत कमी हो सकती है। हिमालयन आईबेक्स के मामले में, यह 33.7 से 64.8 प्रतिशत तक कम होने की आशंका है।

मदन महल पहाड़ी पर हुआ आकाश और वायु तत्व पर आधारित योग क्रियाओं का अभ्यास

जबलपुर (जं.स.) अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर 21 जून को जबलपुर म निर्माण की गतिविधियों के तहत स्मार्ट सिटी द्वारा मदनमहल पहाड़ी पर बैलेंसिंग रॉक के समीप योग के पांच तत्वों में से आकाश एवं वायु तत्व पर केंद्रित योग क्रियाओं का अभ्यास किया गया। इस अवसर पर नीले कपड़ों एवं गुब्बारों से 21 जून की आकृति बनाई गई।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जबलपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड चन्द्रप्रताप गोहल के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुये योगाभ्यास के इस कार्यक्रम में आकाश तत्व पर आधारित योग क्रियाओं का अभ्यास दो सौ से अधिक प्रतिभागियों ने योगाचार्य अनुभा जैन की मार्गदर्शन में किया गया। योग क्रियाओं के प्रदर्शन के बाद खाद्य सुरक्षा प्रशासन विभाग द्वारा ईट राइट तथा कोदो, कुटकी, रागी, कांगनी, सांवा जैसे श्री अन्न (मिलेट्स) को दैनिक आहार में शामिल करने के लिये जन-जागरूकता पैदा करने रैली का आयोजन भी किया गया। शारदा चौक और मदन महल क्षेत्र में निकाली गई इस रैली में नारों एवं पोस्टर पर लिखे सन्देश के माध्यम से दैनिक आहार में श्री अन्न को शामिल करने से होने वाले फायदों की जानकारी लोगों को दी गई।

केदारनाथ में पर्यावरण को लेकर नहीं हो रहा कोई काम, विशेषज्ञों ने भविष्य के लिए जताई चिंता

केदारनाथ धाम में आई आपदा के बाद से यहां के तापमान में भारी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं. पहले जहां धाम में बर्फबारी और बारिश समय पर होने से तापमान सही रहता था. ग्लेशियर टूटने की घटनाएं सामने नहीं आती थीं. वहीं अब कुछ सालों से धाम में ग्लेशियर चटकने की घटनाएं बार-बार सामने आ रही हैं. इसके साथ ही यहां के बुग्यालों को नुकसान पहुंचने से वनस्पति और जीव जंतु भी विलुप्ति के कगार पर हैं. आपदा के बाद से केदारनाथ धाम में पर्यावरण को लेकर कोई कार्य नहीं किये जाने से पर्यावरण विशेषज्ञ भी भविष्य के लिए चिंतित नजर आ रहे हैं.

केदारनाथ आपदा को नौ साल का समय बीत चुका है. तब से लेकर आज तक धाम में पुनर्निर्माण कार्य जोरों पर चल रहे हैं. धाम को सुंदर और दिव्य बनाने की दिशा में निरंतर काम किया जा रहा है, लेकिन इन पुनर्निर्माण कार्यों और बढ़ती मानव गतिविधियों के साथ ही हेली सेवाओं ने धाम के स्वास्थ्य को बिगाड़कर रख दिया है. यहां के पर्यावरण को बचाने की दिशा में कोई कार्य नहीं किया जा रहा है, जिससे आज केदारनाथ की पहाड़ियां धीरे-धीरे खिसकनी शुरू हो गई है.

केदारनाथ की भूमि दल-दल की भूमि है. इसलिए इस स्थान को केदार के नाम से जाना जाता है. यहां पर बुग्यालों के साथ ही वनस्पतियों और जीव-जंतुओं का बचा रहना काफी महत्वपूर्ण है. ये चीजे अगर समाप्त हो जायेंगी तो धाम की स्थिति भी धीरे-धीरे खराब हो जायेगी और प्रकृति के साथ ही मनुष्य को भारी नुकसान झेलना पड़ेगा. केदारनाथ धाम में मांस घास खत्म होती जा रही है, जिस कारण धाम की पहाड़ियां धीरे-धीरे खिसकनी शुरू हो गई हैं. बुग्यालों में की जा रही खुदाई, धाम में चल रहे पुनर्निर्माण कार्य और यहां फेंके जा रहे प्लास्टिक कचरे को इसका मुख्य कारण माना जा रहा है. धाम में आज वनस्पतियों की प्रजाति विलुप्ति की कगार पर हैं, जबकि बुग्यालों में पाया जाने वाला बिना पूंछ वाला चूहा, जिसे हिमालयी पिका कहा जाता है, यह भी कम ही देखने को मिल रहा है. इसका कारण यह है कि हिमालय के स्वास्थ्य पर मानव गतिवितियों का गहरा असर पड़ रहा है, जो भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं हैं. इसको लेकर पर्यावरण प्रेमी, वैज्ञानिक और पर्यावरणविद गहरी चिंता व्यक्त कर रहे हैं.

हिमालय को बचाने के लिए कोई प्रयास नहीं किये गये पर्यावरण विशेषज्ञ देवराघवेन्द्र बद्री ने कहा कि आपदा के नौ सालों में केदारनाथ धाम में पुनर्निर्माण कार्य तेजी से किये गये, जबकि मानव गतिविधियां ने रफ्तार पकड़ी. इसके साथ ही हेली सेवाओं में निरंतर वृद्धि हुई, लेकिन हिमालय को बचाने के लिए कोई प्रयास नहीं किये गये. केन्द्र व राज्य सरकार के साथ ही नीति-नियंताओं ने इसके लिए सोचने की जरूरत तक नहीं समझी. आज केदारनाथ धाम के तापमान में काफी परिवर्तन आ गया है. हिमालय का स्वास्थ्य गड़बड़ा रहा है. उन्होंने कहा कि केदारनाथ धाम में पाये जानी वाली घास विशेष प्रकार की है. वनस्पति विज्ञान में इसे मॉस घास कहा जाता है. यह जमीन को बांधने का काम करती है. साथ ही यहां के ईको सिस्टम को भी सही रखती है. बताया कि यह मॉस घास जमीन में कटाव होने से रोकती है और हिमालय के तापमान को व्यवस्थित रखने में मददगार होती है. केदारनाथ धाम चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा है. यहां धीरे-धीरे भू धसाव हो रहा है. यहां मानव का दबाव ज्यादा बढ़ गया है. भैरवनाथ मंदिर, वासुकीताल और गरूड़चट्टी जाने के रास्ते से इस घास को रौंदा जाता है.

देवराघवेन्द्र बद्री ने कहा कि बुग्यालों में खुदाई करके टेंट लगाए गए हैं. जिन स्थानों पर टेंट लगाए गए हैं, वहां के बुग्यालों को पुनर्जीवित करने के लिए कोई कार्य नहीं किया जाता है, जिससे पानी का रिसाव होता जाता है और भूस्खलन की घटनाएं सामने आती हैं. उन्होंने कहा कि हिमालयी क्षेत्रों में मांस घास को उगने में समय लगता है. यहां का तापमान बदलता रहता है. ऐसे में इस घास को उगने में काफी समय लग जाता है. जिन जगहों पर निर्माण कार्य हुए हैं, वहां भी मांस घास खत्म हो गई है. इसकी भरपाई के लिए कोई भी कार्य नहीं किया गया है.

विलुप्ति की कगार पर है हिमालयी पिका केदारनाथ. हिमालय के पारिस्थितिक तंत्र को बनाये रखने के लिए हिमालयी पिका का विशेष योगदान होता है. यह जानवर चूहा और खरगोश के बीच की कड़ी होता है, जो बुग्यालों में देखा जाता है, लेकिन अब इसकी प्रजाति धीरे-धीरे विलुप्ति की कगार पर है. हिमालय में विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियां पाई जाती हैं. ये जड़ी-बूटियां हिमालयी पिका का भोजन होती हैं. इन जड़ी-बूटियों को खाने के बाद इसके द्वारा निकाले जाने वाले मल-मूत्र से बुग्यालों को बनाये रखने में सहायक सिद्ध होता है. केदारनाथ यात्रा मार्ग पर चिप्स के पैकेट, बिसलेरी की बोतलों को फेंके जाने से इसके जीवन में भी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं. इसके मुंह का स्वाद ही बिगड़ गया है और इसका अस्तित्व खतरे में है. केदारनाथ यात्रा पड़ावों में सिंगल यूज प्लास्टिक के कारण हिमालयी पिका का जीवन संकट में है.

हेली सेवाओं की गर्जनाओं से हो रहा एवलांच केदारनाथ. केदारनाथ धाम की पहाड़ियों में लगातार एवलांच की घटनाएं सामने आ रही हैं. इसके लिए पर्यावरणविद धाम में हो रहे तापमान बदलाव के कारण मानते हैं. पर्यावरणविद जगत सिंह जंगली की माने तो केदारनाथ धाम के तापमान में ग्लोबल वार्मिंग के कारण वृद्धि देखने को मिल रही है. ग्लेशियर खिसक रहे हैं. केदारनाथ धाम में अनियंत्रित लोगों के जाने से वातावरण को नुकसान पहुंच रहा है. हिमालय क्षेत्र में हेलीकॉप्टर सेवाएं टैक्सी की तरह कार्य कर रही हैं, जबकि इनकी उड़ानों को विशेष इमरजेंसी की सेवाओं में उपयोग किया जाना चाहिए.

हिमालय में बड़े-बड़े ग्लेशियर हैं. केदारनाथ का मतलब दल-दल की भूमि है. यहां भारी-भरकम मशीनों का प्रयोग किया जा रहा है. पहले केदारनाथ धाम का तापमान सही रहता था, जिस कारण ग्लेशियर टूटने की घटनाएं सामने नहीं आती थी, मगर अब तापमान में वृद्धि के चलते ग्लेशियर चटकने की घटनाएं सामने आ रही हैं. कहा कि केदारनाथ धाम की यात्रा को नियंत्रित किया जाना चाहिए. हिमालय क्षेत्रों में ध्यान देने की जरूरत है.

दो तरह का प्रदूषण फैला रही हेली सेवाएं हेलीकॉप्टर सेवाएं केदारनाथ यात्रा के लिए यह महत्वपूर्ण मानी जाती है, वहीं इनकी सेवाओं से दो तरह का प्रदूषण भी फैल रहा है. जो पर्यावरण के लिए घातक साबित हो रहा है. पर्यावरण विशेषज्ञ देव राघवेन्द्र बद्री की माने तो हेली सेवाओं से दो तरह का प्रदूषण फैल रहा है. पहला ध्वनि प्रदूषण है. हेलीकॉप्टर सेवाएं जितनी तेजी से चलेंगी, उतनी तेजी से ग्लेशियरों पर भी प्रभाव पड़ेगा. दूसरा इसके ऑयल से निकलने वाला कार्बन भी नुकसानदायक है. केदारनाथ धाम के लिए हेली सेवाएं टैक्सी की तरह संचालित हो रही हैं. हेली सेवाओं के संचालन से केदारनाथ धाम को भारी नुकसान पहुंच रहा है.

उत्कृष्ट जल प्रबंधन के लिये मध्यप्रदेश को मिला सर्वश्रेष्ठ राज्य का प्रथम राष्ट्रीय जल पुरस्कार

उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ ने नई दिल्ली में किया पुरस्कृत

इंदौर सर्वश्रेष्ठ शहरी स्थानीय निकाय श्रेणी के द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित

भोपाल मध्यप्रदेश को जल संसाधन के संरक्षण, संवर्धन और प्रबंधन में उत्कृष्ट कार्यों के लिए सर्वश्रेष्ठ राज्य श्रेणी का प्रथम राष्ट्रीय जल पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह देश का चौथा राष्ट्रीय जल पुरस्कार-2022 है। उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने मध्यप्रदेश के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट और अपर मुख्य सचिव श्री एस.एन. मिश्र को नई दिल्ली विज्ञान भवन में प्रथम पुरस्कार के प्रशस्ति-पत्र और ट्रॉफी से सम्मानित किया। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, जल शक्ति राज्य मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल और श्री बिश्वेश्वर टुडु भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में 11 विभिन्न श्रेणी में 41 विजेताओं को सम्मानित किया गया।

इंदौर नगर निगम को जल आपूर्ति तथा वितरण में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ शहरी स्थानीय निकाय श्रेणी के द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने इंदौर के महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव और अपर आयुक्त श्री सिद्धार्थ जैन को प्रशस्ति-पत्र, ट्रॉफी और एक लाख 50 हजार रूपये नकद पुरस्कार से सम्मानित किया।

जल संसाधन मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में कृषि और किसानों के लिए ऐतिहासिक काम हुए हैं। विगत 18 वर्ष में प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़ कर 45 लाख हेक्टेयर हो गया है, जिसे वर्ष 2025 तक 65 लाख हेक्टेयर किये जाने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।

जल प्रबंधन के हर क्षेत्र में मध्यप्रदेश ने उत्कृष्ट कार्य किया है।

जल उपयोग दक्षता उन्नयन

प्रदेश में बांध से सीधे खेतों तक भूमिगत पाइप लाइन से जल पहुँचाने का नवाचार हुआ है। प्रदेश की मोहनपुरा एवं कुंडालिया परियोजना, जिसकी सिंचाई क्षमता 2 लाख 25 हज़ार हेक्टेयर है, जल उपयोग दक्षता उन्नयन के क्षेत्र में अनुकरणीय सिंचाई परियोजना के रूप में स्थापित हो चुकी है।

साइंस टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल मानव कल्याण के लिए हो-मुख्यमंत्री श्री चौहान

भोपाल मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि भारत वासियों की सोच में साइंस टेक्नोलॉजी, समाज और संस्कृति, आज से नहीं हजारों सालों से है। भारत, दुनिया के कल्याण के लिए एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। सारी दुनिया एक ही परिवार है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वन अर्थ, वन फेमिली और वन फ्यूचर की बात कही है, जो भारत का प्राचीन विचार है। भारत में बच्चा-बच्चा कहता है कि धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो और विश्व का कल्याण हो ।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने होटल ताज में जी-20 अंतर्गत साइंस-20 कॉन्फ्रेंस-ऑन कनेक्टिंग साइंस टू सोसायटी एंड कल्चर में आए त्र-20 के सदस्य देशों, आमंत्रित राज्यों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के वैज्ञानिक समुदाय के प्रतिनिधियों से संवाद में यह बात कही। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रकृति का शोषण नहीं होना चाहिए, मानव कल्याण के लिए उसका सही दिशा में दोहन किया जाए। प्रकृति की पूजा करें। टेक्नोलॉजी मनमानी करने के लिए नहीं है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का व्यर्थ दोहन न हो। विज्ञान टेक्नोलॉजी का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है। इसका उपयोग सुशासन के लिए होना चाहिए। विज्ञान का उपयोग समाज के कल्याण के लिए मर्यादित रूप में हो। वैज्ञानिकों का कर्तृतव्य है कि साइंस का उपयोग विनाश के लिए नहीं बल्कि रचनात्मकता के लिए किया जाए। लोगों की समस्याओं के समाधान, उनके कल्याण और आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए धरती को रहने लायक बनाने टेक्नोलॉजी का बेहतर उपयोग करें। दुनिया की भलाई के लिए ही टेक्नोलॉजी का उपयोग हो।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखना आवश्यक

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि भौतिक और नैतिक दोनों का समन्वय करने के लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करना बेहतर है। लोगों का जीवन स्तर सुधारने और बेहतरी के लिए विज्ञान का उपयोग हो। हमें पर्यावरण संतुलन बनाए रखने और प्रदूषण फैलने से रोकने के उपाय सुनिश्चित करने होंगे। पेड़-पौधे, कीट-पतंगे तथा जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ समाप्त न हों, इस पर भी ध्यान देना होगा। जियो और जीने दो के सिद्धांत पर चलकर सभी के कल्याण के लिए अपना योगदान दें। विज्ञान का अमर्यादित उपयोग न हो। हम सब एक हैं, एक ही चेतना हैं। प्रेम, स्नेह, शांति और आत्मीयता बनाए रखकर एक-दूसरे के लिए सदैव खड़े रहें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्रांरभ में सम्मेलन में आए प्रतिनिधियों का स्टॉल भेंट कर स्वागत किया। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश, देश का दिल है। देश के दिल की राजधानी भोपाल में आपका हृदय से स्वागत है। उल्लेखनीय है कि एस-20, जी-20 का भाग है। वैज्ञानिक तरीके से यह लोगों की समस्याओं को समझने और निदान करने के लिए प्रयासरत है। सम्मेलन में साइंस को सोसायटी और कल्चर के साथ जोड़ने के लिए गहन विचार-विमर्श हुआ। भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष तथा पद्मविभूषण से सम्मानित डॉ. राजगोपाल चिदंबरम, इंडोनेशिया के प्रतिनिधि प्रो. अहमद नजीब बुरहानी, ब्राज़ील के प्रतिनिधि प्रो. रुबेन ओलिवन, अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन और नीति विश्लेषण संस्थान के उपाध्यक्ष प्रो. सचिन चतुर्वेदी, डॉ. आलोक श्रीवास्तव तथा श्री अजय प्रकाश साहनी सहित अन्य वैज्ञानिक प्रतिनिधि मौजूद थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008